परमेश्वर परिवार में विश्वास एक दूसरे की सेवा करते हैं।

पवित्र आत्मा के वरदान विश्वासियों को इस योग्य करते कि वे नये नियम की एक दूसरे की आज्ञा पालन करते हैं।

विश्वासियों और उनके चरवाहों को अपना झुण्ड बनाना चाहिये जो एक दूसरे को बढ़ाने में काफी होंगे और उन्हें सेवकाई में भाग लेने की अनुमति दें।

गलतियों 5:13 प्रगट करता है कि विश्वासियों को एक दूसरे की सेवा करनी चाहिये: "हे भाइयो तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाये गये हैं परन्तु ऐसा नही कि ये स्वतंत्रता शरीरिक कामों के लिये अवसर बने वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो" (टी एन आई वी) ऐसे बहुत से एक दूसरे के पद बाइबल में पाये जाते हैं

सच्चे नये नियम की कलीसिया की देह का जीवन ये भंग करता है कि विश्वासी छोटे झुण्डों में मिले जिससे वे एक दूसरे के साथ मिलजुल सकें और हर एक को हिस्सा मिले।

- विश्वासियों को एक दूसरे की सुनना चाहिये और आत्मिक अनुशासन से एक दूसरे की सहायता करना चाहिये जिसे परमेश्वर आज्ञा देता है। विश्वासियों को एक दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिये एक दूसरे के लिये प्रार्थना करना चाहिये एक दूसरे के सामने अपने दोष मान लेना चाहिये आदि आदि।
- पवित्र आत्मा विश्वासियों को जो वरदान दिया उससे इस योग्य करता है कि एक दूसरे की बढोत्तरी में और सेवा करने में सहायता करें।
- भले ही विश्वासी हर एक को छोटे झुण्ड में बोलने के लिये प्रोत्साहित करें पर उन्हें शर्मीले नये लोगों को जब तक वे तैयार ना हों उन्हें जबरदस्ती नहीं करना चाहियें।
- विश्वासियों को "एक दूसरे" के नये नियम के गतिशील दोनो झुण्ड के बीच और झुन्डों में इसे व्यवहार में लायें। कलीसिया के देह के जीवन को किसी एक झुण्ड पर ही सीमित नहीं रहने देना चाहिये विश्वासी देह के जीवन को व्यवहार में लाते हैं क्योंकि एक छोटे झुण्ड के पास सभी बाइबल आधारित आत्मिक वरदान नहीं होंगे। परमेश्वर हर झुण्ड के शापस्त्रों को भिन्न भिन्न आत्मिक वरदान देता है। उदाहरण के लिये यदि आपका झुण्ड सुसमाचारद्वप्रचार में कमजोर है तो सुसमाचार प्रचार के दूसरे तरीके ना खोजें। पर दूसरी मन्डली या झुण्ड से सुसमाचार प्रचारक खोजें जो आपकी सहायता करने को तैयार हैं। आपका झुण्ड या मंडली भी दूसरों की किसी तरह सहायता कर सकती है।
- विश्वासी छोटे झुन्ड में अच्छी तरह आपस में मिल जुल लेते हैं इसलिये छोटी मन्डली को घरों पर ही आयोजित करें या जहाँ कहीं विश्वासी जमा हो सकते हैं। आराधना सभाके बीच में वे दो या तीन लोगों के झुन्ड को एक दूसरे से बात करने की अनुमति दें जिससे वे प्रार्थना कर सकें और योजना बना सकें।

शायद इससे बेहतर विश्वासियों की सेवकाई को शक्तिशाली रूप से सामर्थ करने का तरीका और नहीं हो सकता कि इस प्रकार की दयामय स्वत: सेवा मन्डली और विश्वासियों के बीच आपसी सामंजस्य बनाया जा सके।

अगुवों की जिम्मेदारियां

- हर एक को संचारित (तैयार) करना। चरवाहा होकर आपकी जिम्मेदारी है कि देखें कि आपके झुन्ड के सभी सदस्य एक दूसरे को बढ़ाने में सेवकाई में अपने वरदानों को इस्तेमाल करें (इफिसियों 4:11-16)
- सन्तुलन बनाये रखने का उद्देश्य रखें एक वरदान के आधार वाली सेवकाई को दूसरों की अपेक्षा एक ही पर जोर ना दें (1 कुरिन्थि 12:14-30) एक झुन्ड की सबसे बड़ी कमजोरी साधारणत: सबसे मज़बूत सेवकाई को सस्तित्व में लेना है।
- नेट वर्क खोजें कोई भी छोटे झुन्ड के पास सभी वरदान जो आवश्यक हैं नहीं होते। नये नियम के झुन्ड की देह का जीवन मन्डली के साथ के सामंजस्य की मांग करता है। मकीदूनिया के गरीब मसीही उदाहरण के लिये पास देने का वरदान था और उन्होंने दूसरी जगहों पर प्रभु के काम के लिये इसे इस्तेमाल किया (2 कुरिन्थि 8:1-55 का प्रेरित 18:1-5 की जुलना करें)।

नये नियम की "एक दूसरे" की आज्ञाएं

झुन्डों और झुन्डों के बीच प्रेम भय संगति का निर्माण करें।

उस आज्ञा का अध्ययन करें जिसकी आपके झुन्ड में अति आवश्यकता है। जो सभा में शामिल हैं निर्णय करें कि पहले किसका अध्ययन कर व्यवहार में लाना है।

1 प्रेम

- एक दूसरे से प्रेम करो: यूहन्ना 13:34-35; 5:12,17; रोमियों 12:10; 1 थिस्सलुनि 4:9; 1 यूहन्ना 3:11,14,23; 4:7,11,12; 2 यूहन्ना 1:5; 1 पतरस 1:22
- व्यवस्था पूरी करने के लिये एक दूसरे से प्रेम करो: रोमियों 13:8
- एक दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ाओ: 2 थिस्सलुनि 1:3
- एक दूसरे के प्रति प्रेम में बढाते जाओ: 1 थिस्सलुनि 3:12
- पापों को ढांपने के लिये एक दूसरे से गहराई से प्रेम करो: 1 पतरस 4:8

2 संगति और मेल मिलाप

- एक दूसरे के साथ संगति रखो: 1 यूहन्ना 1:7
- एक दूसरे को क्षमा करो: इफिसि 3:13; 4:32; कुलुस्सियों 3:13
- पवित्र चुम्बन से एक दूसरे का अभिवादन करो (कुछ संस्कृति में आलिंगन करना) रोमियो 16:16 1 कुरिन्थि 16:20; 2 कुरिन्थि 13:12; 1 पतरस 5:14
- रोटी तोड़ने के लिये एक दूसरे के लिये ठहरो: 1 कुरिन्थि 11:33
- एक दूसरे की यातनाओं को सहें: 1 कुरिन्थि 12:26

3. सेवा

- एक दूसरे की सेवा हर व्यक्ति ने जो वरदान प्राप्त किया है: 1 पतरस 4:10
- प्रेम से एक दूसरे की सेवा करो: गलतियों 5:13
- एक दूसरे पर दया करो: 1 थिसलोनी 5:15
- एक दूसरे की चिन्ता करो: 1 कुरिन्थि 12:25
- एक दूसरे का भार उठाओ: गलतियो 6:2
- नम्रता के चिन्ह के लिये एक दूसरे के बल हो: यूहन्ना 13:14
- एक दूसरे के साथ कार्य करो: 1 कुरिन्थि 3:9, 2 कुरिन्थि 6:1

4. सिखाओ

- एक दूसरे को सिखाओ: कुलुस्सियों 3:16
- एक दूसरे को निर्देश दो: रोमियो 5:14

5. प्रोत्साहित करना

- एक दूसरे को प्रोत्साहित करो: कुलुस्सियों 3:16; इब्रानी 10:25
- एक दूसरे को बढ़ाओ: इब्रानी 3:13
- एक दूसरे से सत्य बोलो: इफिसियों 4:25
- एक दूसरे के लिये प्राण दो: 1 यूहन्ना 3:16
- प्रेम करने और भले काम करने के लिये एक दूसरे को उकसाओ: इब्रानी 10:24

6. प्रार्थना अंगीकार और बढ़ाना

- एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो: याकूब 5:16
- आपस मे एक दूसरे के समने अपने अपने पापो को मान लो: याकूब 5:16
- एक दूसरे को बढ़ायें (समर्थ करें निर्माण करें) 1 थिसलोनी 4:18 और 5:1 एवं 11
- एक दूसरे को बढ़ाओ हर एक भजन के साथ, निर्देशन, प्रकाश के साथ अन्यभाषा या उसके अनुवाद के साथ: 1 कुरिन्थि 14:26
- एक साथ परमेश्वर की महिमा करो: रोमियों 15:6

7. नम्रता से एकता बनाओ

- एक दूसरे का आदर करो रोमियो 12:10
- एक दूसरे के साथ एक मन के हो: 2 कुरिन्थि 13:11; रोमियों 12:16; 15:5
- एक दूसरे की आलोचना न करो: रोमियों 14:13
- एक दूसरे की बुराई मत करो: याकूब 4:11; 5:9
- एक दूसरे के आधीन रहो: इफिसियों 5:21
- एक दूसरे के प्रति नम्रता का वस्त्र पहना करो: 1 पतरस 5:5

8. मित्र भाव से जियो

- एक दूसरे के प्रति धीरज धरो: इफिसियों 4:2
- एक दूसरे के साथ शान्ति से रहो: मत्ती 9:50
- परेशानी में एक दूसरे को ग्रहण करो: रोमियों 15:7; 1 पतरस 4:9

हर एक को जानने और अपने वरदानो को एक दूसरे की सेवा में इस्तेमाल करने में सहायता करें।

अधिकतर यहाँ जो वरदान सूचिबद्ध किया गया बाइबल के आधारित व्यक्ति को आपको उन्हें बताने के लिये उदाहरण रूप रखा गया है।

रोमियों 12:6-8 की सूचि में दिये गये आत्मिक वरदानो को व्यवहार में लायें:

नीचे दी गई सूचि में कोष्टक में जिन्हे लगायें []जो हमारे झुन्ड में वरदान को विकसित होने की समरत है आपको शायद सहायता के लिये दूसरे झुन्ड के साथ प्रबन्ध करना होगा और जिस क्षेत्र में आपका झुन्ड मज़बूत है उसमें उनकी सहायता करें।

[] सेवा करना। डीकन्स (सेवक) प्रेरित 6:1-7

[] भविष्यवाणी करना शक्ति समझाने और प्रोत्साहन के लिये परमेश्वर की ओर से सन्देश। 1 कुरिन्थि 14:3

[] देना अबीगैल 1 सामुएल 25, मार्गदर्शन: 2 कुरिन्थि 9

[] सिखाना हर रोजा: नेहमिय्याह 8 अभिप्राय इफिसियों 4:11-16

[] प्रोत्साहित करना: बढ़ाना इफिसि प्राचिनों के साथ पौलुस प्रेरित 20:17-38

[] अगुवाई करना एक सेवक अगुवा बनो जो दूसरों को सेवकाई में मदद करता है: मूसा निर्गमन 18:13-26

[] दया दिखाओ दाऊद के साथ शाऊल, 1 सामुएल 24

1 कुरिन्थि 12:7-11 और 27-30 के अनुसार आत्मिक वरदानों की सूचि को भी व्यवहार में लाना

[] बुद्धि के साथ समझाना। सुलेमान 1 राजा 3:5-28

[] ज्ञान पर आधारित (तनय पर) निर्णय 1 बिरीया के लोग वचन की खोज में प्रेरित 17:10-12

[] सहायता प्रिस्लिला और अक्विल्ला प्रेरित 18:1-5,24-28

[] जाओ प्रेरित की तरह (भेजा हुआ) रोमियों 5:20-21, पौलुस प्रेरित अध्याय 13-14

[] परख नाथन 2 सामुएल अध्याय 11 और 12

[] चंगाई पतरस और यूहन्ना लंगड़े को चंगा करते हैं प्रेरित अध्याय 3-4

[] प्रशासन नहेमिय्याह: नहेमिय्याह अध्याय 2-3

[] आश्चर्य कर्म करना एलिय्याह: 1 राजा 18:16-46 ऐलीशा: 2 राजा अध्याय 2-5

[] अन्यभाषा बोलना कुरनेलियुस का घराना प्रेरित 10:44-48 इस वरदान को अगमी के साथ इस्तेमाल करें।

[] अन्य भाषा का अनुवाद 1 कुरिन्थि 14 में देखें

[] विश्वास इस्तेमाल करना (सब को आवश्यक है पर कुछ दूसरों पर लाद देते हैं) कोढ़ी और सूबेदार मत्ती 8:1-13 पुराने नियम के विश्वासयोग्य इब्रानी 11

दूसरे वरदानो को भी व्यवहार में लायें जो इफिसियों 4:11 में सूचिबद्ध हैं।

[] सुसमाचार की घोषणा (सुसमाचार प्रचारक) फिलिप्पुस, प्रेरित 8:26-40

[] पादरी (चरवाहा) इफिसि के प्राचीन, प्रेरित 20:28-34; 1 पतरस 5:1-4